राजस्थान का रेगिस्तान

ऊँट पर लदा घर

अपने इलाके में गेहूँ की कटाई के बाद बड़े–बड़े झुंडों में भेड़ों का आना शुरू हो जाता है। भेड़ों के आगे–पीछे सीटी–सी आवाज निकालते गड़रिये आते हैं। हाथ में डंडा लिये ये लोग घुटने तक धोती पहने रहते हैं। इसके ऊपर दिखाई देता है एक अंगरखा, सिर पर बड़ी–सी पगड़ी और कान में सोने की मुरकी। औरतें एकदम काले रंग के ऊन के कपड़े पहनती हैं।

कुछ ही दूरी पर इनका डेरा रहता है, जिसमें ऊँट और उस पर लदी पूरी घर–गृहस्थी होती है। ये लोग ज़्यादा दिनों तक एक जगह टिक कर नहीं रहते। भेड़ों के साथ–साथ कभी इस गाँव तो कभी उस गाँव घूमते रहते हैं। और बरसात के बाद कई महीने नहीं दिखते हैं।

ऊँट पर लदी घर–गृहस्थी

आखिर ये लोग कौन हैं? कहाँ से आते हैं! हर साल गेहूँ की कटाई के बाद ही क्यों आते हैं? और फिर कुछ दिनों बाद दिखाई क्यों नहीं देते? कहाँ चले जाते हैं? इन सब सवालों का जवाब जानने के लिए थार रेगिस्तान चलना होगा, यहाँ से बहुत दूर, पश्चिम की ओर राजस्थान राज्य में जाना होगा। रेगिस्तान को मरूस्थल भी कहते हैं ।

थार मरूस्थल

भारत के नक्शे में तुम राजस्थान राज्य पहचानो।

राजस्थान का पश्चिमी भाग थार मरूस्थल है। अपने देश में सबसे कम बारिश थार मरूस्थल में होती है। साल भर में सिर्फ 8–10 दिन की बारिश – वह भी बिल्कुल हल्की। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि दो तीन साल पानी गिरता ही नहीं। ऐसे इलाके में घने जंगल तो नहीं उग सकते। दूर–दूर में कुछ एक पेड़, कँटीली झाड़ियाँ व घास ही उग पाते हैं। ज्यादातर घास व पौधे तो बारिश में उगकर तुरन्त खत्म हो जाते हैं।

राजस्थान का एक गाँव

थार के कुछ हिस्से तो पथरीले हैं बाकी में खूब सारा रेत का जमाव है। रेत के बड़े बड़े टीले हैं जो तेज हवा में उड़–उडकर एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं।

इस पथरीली व रेतीली भूमि में दूर दूर पर कहीं कहीं गाँव व बस्तियाँ हैं। इन्हीं बस्तियों के कुछ लोग हर साल हमारे पदेश में अपने भेड़ चराते हुए आते दिखते हैं। तुम्हें सोचकर ही आश्चर्य होगा कि ऐसी जगह लोग कैसे रहते होंगे। उन्हें पीने, खाना पकाने, नहाने–धोने के लिए पानी कहाँ से मिलेगा, वहाँ खेती–बाड़ी कैसे होगी ?

तुमने गाँव का विवरण पढ़ा। उन बातों को रेखांकित करो जो चित्र में दिख रही हैं?

पानी कहाँ से मिलेगा?

पानी के लिए यहाँ कुएं तो हैं, मगर पानी बहुत गहराई में मिलता है – वो भी खारा। कहीं–कहीं मीठे पानी का कुआँ होता है तो दूर–दूर से लोग आकर पानी भरते हैं। वैसे यहाँ के लोग बरसात में बरसने वाले पानी को व्यर्थ जाने नहीं देते हैं। वे सब अपने घर के आँगन में जमीन के नीचे पक्की टंकी बनाकर उसमें बरसात का पानी जमा करते हैं। इस पानी को थोड़ा–थोड़ा सालभर खर्च करते हैं। गाँव की निचली जमीन पर तालाब बनाकर पानी इकट्ठा करते हैं जिससे जानवर पानी पीते हैं। ऐसे और भी कई तरीकों से बारिश के पानी को बचाकर रखते हैं।

आजकल गहरे नलकूपों से भी जमीन के नीचे का पानी निकालकर उपयोग किया जाता है।

यदि वर्षा हुई तो थोड़ी खेती भी कर लेते हैं। यहाँ के खेतों में बाजरा, मोठ नाम की दाल, तिल आदि हो जाते हैं। ये ही इनका मुख्य भोजन भी है। पेड़ों व झाड़ियों में होने वाले फलों को सुखाकर सालभर खाया जाता है।

घर के आंगन में जमीन के नीचे पक्की टंकी

1. *कहाँ पर अधिक वर्षा होती है– अरुणाचल में या थार में ?*
2. *क्या अरुणाचल में भी लोगों को बारिश के पानी को इकट्ठा करके रखना पड़ता है?*
3. *कहाँ पर रेतीले मैदान हैं?*

पशुपालन

रेगिस्तान में घास उग आती है, इसलिए यहाँ पशुपालन बहुत होता है। ये लोग ऊँट, भेड़, बकरी आदि पालते हैं।

भेड़ों से गड़रियों को दूध और खाद के अलावा ऊन भी मिलती है। ऊँट का उपयोग हल चलाने के लिए व गाड़ी खींचने के लिए होता है। इसके अलावा कहीं आने–जाने के लिए भी ऊँट ही इनका साधन होता है।

बालू के मैदान में ऊँट दूसरे जानवरों की तुलना में आसानी से चल लेता है। वह कई दिनों तक पानी पिये बगैर भी रह सकता है। इसीलिए ऊँट को रेगिस्तान का जहाज़ कहते हैं।

क्या तुम कभी रेत में दौड़े हो ? यदि नहीं तो कभी नदी की सूखी रेत में दौड़कर देखो। क्या दिक्कत आई? क्या ऊँट को भी यही दिक्कत आती होगी?

ऊँट , रेगिस्तान का जहाज़

बरसात भर तो गड़रिए यहीं रहते हैं, क्योंकि इन दिनों खेतों में बाजरे की फसल खड़ी रहती है। फिर बरसात में उगी घास भेड़ों को मिलती रहती है। जुलाई में बोया गया बाजरा अक्टूबर तक कटता है। इस समय तक भेड़ें आसपास की घास खा चुकी होती हैं। अब भेड़ों को खेतों में भी चराया जा सकता है क्योंकि खेतों में बाजरे के ठूंठ ही बाकी रहते हैं। कुछ ही दिनों में ये भी खत्म होने लगता है।

बच्चे गधों पर पानी ले जा रहे हैं

अब गड़रिए अपना डेरा ऊँट पर लादकर चारे की तलाश में निकल पड़ते हैं। कुछ झुंड हरियाणा राज्य में, तो कुछ गुजरात या मध्यप्रदेश की तरफ। ये लोग खेतों और जंगलों में भेड़ चराते हुए, हमारे यहाँ तक आ जाते हैं। इसमें उन्हें कई महीने लग जाते हैं। ये लोग गेहूँ की कटाई के बाद इसलिए आते हैं ताकि भेड़ों को चरने के लिए चारा मिल सके। यदि खेत में गेहूँ की फसल खड़ी रहे तो उन्हें खेत में कौन घुसने देगा?

फिर हमारे यहाँ किसान खेतों में भेड़ें भी बिठाते हैं। भेड़ बिठाने का मतलब है भेड़ रात भर खेत में ही रहेंगी। इससे किसान को खेत में खाद मिल जाती है। किसान गड़रिए को भेड़ बैठाने के पैसे देता है। इस तरह ये लोग एक–डेढ़ महीना यहाँ बिताने के बाद वापस थार मरूस्थल के लिए चल पड़ते हैं। बरसात शुरू होने के पहले वापस पहुँचना ज़रूरी है ताकि वे खेती का काम शुरू कर सकें। इस तरह ये लोग न जाने कितने सालों से भेड़ लेकर थार से मध्यप्रदेश, गुजरात, हरियाणा के गाँव–गाँव, खेत–खेत घूमते हैं।

अभ्यास

1. *गड़रिए कहाँ से आते हैं?*
2. *कहाँ पर बाजरा होता है ?*
3. *ये लोग हर साल गेहूँ की कटाई के बाद ही क्यों आते है?*
4. *भेड़ों को खेत में बैठाने से क्या फायदा होता है?*
5. *कहाँ पर लोग मिथुन पालते है? कहाँ पर ऊँट पालते हैं ?*
6. *भेड़ से हमें क्या–क्या मिलता है?*
7. *बच्चे पानी कैसे ले जा रहे है?*

नीचे लिखे वाक्यों पर सही/गलत का निशान लगाओ

1. *गड़रियों का मुख्य काम खेती करना है।*
2. *थार में भेड़ों के लिए घास खाने को मिलती है।*
3. *थार को मरूस्थल या रेगिस्तान कहते हैं।*
4. *गड़रिए चारे की तलाश में भेड़ें लेकर बिहार, असम राज्य की तरफ चल पड़ते हैं।*
5. *भेड़ों के ऊन से गरम कपड़े बनते हैं जिन्हें ठंड में पहना जाता है।*